लोकभारती
पेपरबैक्स

मैथिलीशरण गुप्त

साकेत

महात्मा गाँधी तथा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के साथ पत्र-व्यवहार सहित

Scanned with OKEN Scanner

प्रथम पुस्तकालय संस्करण
1931 में प्रकाशित

लोकभारती पेपरबैक्स में पहला संस्करण : 2012

© प्रमोद कुमार गुप्त

लोकभारती पेपरबैक : उत्कृष्ट साहित्य के लोकप्रिय संस्करण

साहित्य सदन, झाँसी की ओर से

लोकभारती प्रकाशन
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग,
इलाहाबाद-211 001

वेवसाइट : www.lokbhartiprakashan.com
ईमेल : info@lokbhartiprakashan.com
शाखाएँ : 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006 (बिहार)

आवरण चित्र : लोकभारती स्टूडियो

इंण्डियन प्रेस प्रा.लिमिटेड
इलाहाबाद-211002
द्वारा मुद्रित

मूल्य : ₹ 195

SAKET
by Shri Maithili Sharan Gupt

ISBN : 978-81-8031-729-3

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

प्रथम सर्ग : 1
द्वितीय सर्ग : 15
तृतीय सर्ग : 30
चतुर्थ सर्ग : 43
पंचम सर्ग : 61
षष्ठ सर्ग : 81
सप्तम सर्ग : 94
अष्टम सर्ग : 116
नवम सर्ग : 143
दशम सर्ग : 190
एकादश सर्ग : 216
द्वादश सर्ग : 259

Scanned with OKEN Scanner

साकेत राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की वह अमर कृति है जिसे गुप्त जी अपने साहित्यिक जीवन की अन्तिम रचना के रूप में पूरी करना चाहते थे। उनकी इस इच्छा के अनुरूप साकेत वास्तविक अर्थों में उनकी अमर रचना बन गयी।

'साकेत' में राम, लक्ष्मण और सीता के वन गमन का मार्मिक चित्रण है। इस कृति में समस्त मानवीय संवेदनाओं की अनुभूति पाठक को होती है।

इस कृति में उर्मिला के विरह का जो चित्रण गुप्त जी ने किया है वह अत्यधिक मार्मिक और गहरी मानवीय संवेदनाओं और भावनाओं से ओत-प्रोत है। सीता तो राम के साथ वन गयीं, किन्तु उर्मिला लक्ष्मण के साथ वन न जा सकीं। इस कारण उनके मन में विरह की जो पीड़ा निरन्तर प्रवाहित होती है उसका जैसा करुण चित्रण राष्ट्रकवि ने किया है, वैसा चित्रण अन्यत्र दुर्लभ है।

इस करुण चित्रण को पढ़कर पाठक के मन में करुणा की ऐसी तरंग उठना अनिवार्य है, कि आँखें बरबस नम हो जायें और राष्ट्रकवि की साहित्यिक क्षमता को नमन कर उठें।

आवरण : देव प्रकाश चौधरी

ISBN : 978-81-8031-729-3

₹ 195

9 788180 317293

लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद नयी दिल्ली पटना

Scanned with OKEN Scanner